33

मीठा और कड़वा

(10:1-4, 8-11)

जब कलीसिया को भयंकर समयों का सामना करना पड़े तो उसे क्या करना चाहिए? छिप जाना चाहिए? परमेश्वर के हस्तक्षेप की प्रतीक्षा करनी या कांपना चाहिए? अपने संदेश को नरम कर देना चाहिए, जिससे किसी को ठोकर न लगे? प्रकाशितवाक्य 10 और 11 में घोषणा है कि कठिन समयों में कलीसिया को निर्भीक, साहसी और यहां तक कि स्पष्टभाषी होना चाहिए। अध्याय 11 के दो गवाहों की नाटकीय शृंखला में हम कलीसिया के सामने हर हाल में वचन का प्रचार करने की चुनौती को देखेंगे।

ऐसी कठिन चुनौती का सामना कलीसिया कैसे कर सकती है? अध्याय 10 इस बात पर ज़ोर देता है कि पहले तो वचन के लिए *धन्यवाद देकर* और फिर इसे *अपना कर* हम इसका सामना कर सकते हैं। हमारा पिछला पाठ धन्यवाद पर था; इस पाठ में अपनाने पर ज़ोर दिया जाएगा।

विनती (10:1-4, 8, 9)

अध्याय 10 की पहली सात आयतें ''शक्तिशाली स्वर्गदूत'' के बारे में बताती हैं, जिसके ''हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी'' (आयतें 1, 2)। यह छोटी पुस्तक परमेश्वर की ओर से संदेश था।

आयत 8 ध्यान स्वर्गदूत से हटाकर यूहन्ना पर लगा देती है: ''जिस शब्द को मैंने स्वर्ग से बोलते सुना था, वह फिर मेरे साथ बातें करने लगा'' (आयत 8क)। यह वही आवाज़ थी, जिसने उसे सात गरजनों द्वारा कही गई बातें न लिखने का आदेश दिया था (आयतें 3, 4)। अब इस आवाज़ ने उसे बताया, ''जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले'' (आयत 8ख)।[1]

यूहन्ना को अचानक निरीक्षक से भाग लेने वाला बना दिया गया था। कल्पना करें कि यदि आप कोई कार्यक्रम देख रहे हों और आपको मंच पर बुला लिया जाए तो आपको कैसा लगेगा। आपकी भावनाएं आश्चर्य, उत्तेजना और शायद भय से मिली-जुली होंगी। यूहन्ना की भी ऐसी ही प्रतिक्रियाएं रही होंगी। यदि उसकी प्रतिक्रिया ऐसी थी, तो उनसे वह हिचकिचाया नहीं। उसने ''स्वर्गदूत के पास जाकर कहा, यह छोटी पुस्तक मुझे दे'' (आयत 9क)।

स्वर्गदूत का उत्तर था, ''ले, इसे खा ले'' (आयत 9ख)। खा ले? हमारी पहली

प्रतिक्रिया यह हो सकती है कि ''हम पुस्तकें नहीं खाते! हम उन्हें छज्जे पर रखकर धूल खाने देते हैं; उनका इस्तेमाल फूलों को सुखाने और टूटे मेज़ को सहारा देने के लिए करते हैं; कभी-कभी उन्हें पढ़ भी लेते हैं, परन्तु खाते बिल्कुल नहीं हैं!'' क्या खाते हैं? असल में आज हम ऐसी ही अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। हम किसी पुस्तक से आनन्द आने पर उसके लिए ''पूरी कर ली'' शब्द का इस्तेमाल करते हैं। फ्रांसिस बेकन ने कहा है, ''कुछ पुस्तकें स्वाद लेने के लिए होती हैं, और कई निगल जाने के लिए, और बहुत कम चबाकर हज़म करने के लिए।''[2]

पुस्तक ''खाने'' का रूपक यूहन्ना को नया नहीं लगा होगा। यहेजकेल भविष्यवक्ता को आज्ञा दी गई थी, ''... इस पुस्तक को खा ले, ... उसे पचा ले और अपनी अंतड़ियां इससे भर ले। ...'' (यहेजकेल 3:1-3)।[3] परमेश्वर के वचनों के सम्बन्ध में बात करते हुए यिर्मयाह ने कहा था, ''मैंने उन्हें मानो खा लिया और [परमेश्वर के] वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए'' (यिर्मयाह 15:16क)। बाइबल आमतौर पर वचन की तुलना खाए जाने वाले भोजन से करती है (मत्ती 4:4; 1 कुरिन्थियों 3:1, 2; इब्रानियों 5:12-14; 1 पतरस 2:2)।

इब्रानी विचार में, जब कोई व्यक्ति पुस्तक को ''खाता'' तो वह इसके शब्दों का स्वाद लेता, इसकी शिक्षाओं का आनन्द लेता और मन से इसकी सच्चाइयों को ग्रहण कर लेता है। राबर्ट मुल्होलैंड ने लिखा है, ''यह तस्वीर पूरी तरह से परमेश्वर के वचनों को पचा लेने की है, जिससे वे किसी के जीवन को चलाने वाला नियम बन जाए।''[4] वास्तव में यूहन्ना को उस संदेश को अपने जीवन का भाग बनाने की आज्ञा दी गई थी। परमेश्वर के संदेश और परमेश्वर के दूत को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

आज कलीसिया की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक यह है कि हर मसीही परमेश्वर के वचन को अपना भाग बना ले। ऐसा वचन को कभी-कभार चखकर या सप्ताह में एक-आध बार लेने से नहीं हो सकता। वचन को ''खाना'' आवश्यक है! हमें इसे तब तक पढ़ते रहना आवश्यक है, जब तक यह हमारे हृदय का भाग न बन जाए। हमें इसे तब तक मनन करते रहना आवश्यक है, जब तक यह हमारे मन में समा न जाए। हमें इसकी आज्ञा तब तक मानते रहना आवश्यक है जब तक यह हमारे जीवनों का भाग न बन जाए। तभी, और केवल तभी ''मसीह का वचन अधिकाई से हमारे हृदय में बस'' सकता है (कुलुस्सियों 3:16क)।

यूहन्ना के पुस्तक को खाने की तैयारी करने पर स्वर्गदूत ने उसे चौकस किया कि इसे खाने से क्या होगा ''यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी'' (आयत 9ग)।

परमेश्वर के वचन से प्रेम रखने वालों को ''मधु सी मीठी'' वाक्यांश समझने में कठिनाई नहीं आती। भजन लिखने वाले ने कहा है, ''तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं'' (भजन संहिता 119:103; भजन संहिता 19:10 भी देखें)।

दूसरी ओर, ''वह तेरा पेट कड़वा करेगी''[5] कइयों के लिए अजीब वाक्य लग सकता

है, परन्तु मैं आपको यकीन दिला सकता हूं कि परमेश्वर का वचन समय की किसी भी अवधि में सिखाने वालों के लिए संदेश के कड़वे-मीठे स्वभाव को समझना कठिन नहीं है। वचन को सिखाने और सुनाने से चेहरे की रौनक बढ़ जाती है, परन्तु यह आपकी आंखों को आंसू भी दिला सकता है।

यहेजकेल की पुस्तक के अनुसार जब यहेजकेल ने उसे दी गई पुस्तक को खाया, तो उसके ''मुंह में वह मधु के तुल्य मीठी लगी'' (3:3); परन्तु क्योंकि इसमें ''विलाप, शोक और दुख'' था (2:10), इसलिए इस नबी को, ''कठिन दुख'' मिलने में देर नहीं लगी (3:14)। यिर्मयाह ने जब परमेश्वर के वचनों को खाया तो वे उसके ''मन में हर्ष और आनन्द का कारण'' थे (यिर्मयाह 15:16); परन्तु बाद में उसने कहा कि ''यहोवा का वचन दिन भर मेरे लिए निन्दा और ठट्ठों का कारण होता रहता है'' (यिर्मयाह 20:8)।

यूहन्ना के कड़वे-मीठे संदेश का ''कड़वा'' पक्ष क्या था: (क) यह कि प्रेरित के लिए पाप को सामने लाना आवश्यक होना था (9:21; 18:3)? (ख) यह कि उसका अधिकतर संदेश अपश्चातापी लोगों को मिलने वाले दण्ड से सम्बन्धित होना था (19:20; 20:10, 15)? (ग) यह कि, कुल मिलाकर लोगों ने उसके संदेश को ठुकराना था (9:20, 21; 16:11)? (घ) यह कि मनुष्य जाति ने संदेश सुनाने वाले को यातना देकर संदेश पर प्रतिक्रिया व्यक्त करनी थी (11:7; 12:17)? मेरा उत्तर होगा, ''ऊपर लिखी सभी बातें।''

प्रत्युत्तर (10:10)

पुस्तक को खाने के परिणामों का पता होने से यूहन्ना रुक नहीं गया। उसने कहा, ''सो मैं वह छोटी पुस्तक स्वर्गदूत के हाथ से लेकर खा गया'' (आयत 10क)। (पुस्तक खाते हुए यूहन्ना का चित्र देख।) परिणाम वही हुआ जो स्वर्गदूत ने पहले बताया हुआ था ''वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी तो लगी, पर जब मैं उसे खा गया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया'' (आयत 10ख)।

अफसोस की बात है कि आज बहुत से लोग कड़वा-मीठा संदेश सुनना नहीं चाहते। यशायाह के समय के लोगों की तरह वे संदेश सुनाने वाले से कहते हैं, ''हमसे [केवल] चिकनी-चुपड़ी बातें बोलो'' (यशायाह 30:10ग; देखें 2 तीमुथियुस 4:3)। तौ भी परमेश्वर के विश्वासी दूत बनने की चाह करने वालों में प्रचार करने या न करने का चयन करने की विलासिता नहीं होगी। उन्हें ''परमेश्वर की सारी मंशा को... पूरी रीति से बताने से'' (प्रेरितों 20:27) झिझकना नहीं चाहिए बल्कि उन्हें चाहिए कि ''उलाहना दें'' और ''डांटें'' और ''समझाएं'' (2 तीमुथियुस 4:2)।

एच. एल. एलिसन ने कहा है, ''सुसमाचार में एक कड़वा तत्व है, जिसे इसे बिगाड़ कर ही निकाला जा सकता।''[6] लोगों को अनुग्रह पाने की तड़प तब तक नहीं होगी जब तक उन्हें यह पता नहीं चलेगा कि वे पापी हैं। वे उद्धार या मुक्ति की खोज तब तक नहीं करेंगे जब उन्हें समझ नहीं आता कि खोए हुए होने का क्या अर्थ है। वे स्वर्ग के आनन्द को तब तक नहीं समझ पाएंगे जब तक नरक के आतंक की वास्तविकताएं उन पर जाहिर नहीं की जातीं।

मैंने पहले कहा था कि कलीसिया की बड़ी आवश्यकताओं में से एक यह है कि हर मसीही परमेश्वर के वचन को अपने जीवन का भाग बना ले। यह केवल तभी हो सकता है जब हम मीठे के साथ-साथ कड़वा लेने को भी तैयार हों। परमेश्वर ने किसी को भी मीठा निगल जाने और कड़वा थूक देने का विकल्प नहीं दिया है। उसे भाने के लिए हमारे लिए ''इसे पूरा खाना,'' अर्थात इसे पूरा मानना और हर हाल में मानना है।

ज़िम्मेदारी (10:11)

यूहन्ना को छोटी पुस्तक केवल अपनी भूख मिटाने के लिए या दोपहर का खाना खाने के लिए नहीं दी गई थी, बल्कि पुस्तक को खाना उसे और सेवा के लिए तैयार करने के लिए था (10:9-11 की तुलना यहेजकेल 3:1, 4 से करें)। पुस्तक खा लेने के बाद इस प्रेरित को बताया गया था,[7] ''तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं पर,[8] फिर भविष्यवाणी करनी होगी''[9] (आयत 11)। यूहन्ना प्रकाशितवाक्य के आधे तक पहुंचा था परन्तु अभी आगे और बहुत कुछ था। पुस्तक के अन्तिम भाग में ''लोगों और जातियों और भाषाओं और राजाओं'' के बारे में बहुत कुछ कहने को है।

यूहन्ना से क्यों कहा गया कि उसे ''भविष्यवाणी करनी'' होगी?[10] हो सकता है कि यह उसे प्रकाशितवाक्य लिखने के काम को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए हो। मैं प्रकाशन के भयानक जगत में घण्टों के तनाव में रहने की कल्पना भी नहीं कर सकता। शायद यह प्रोत्साहन अधिक सामान्य था। पतमुस पर एकांत में रहते हुए, प्रेरित को लगा हो सकता है कि उसके काम करने का समय पूरा हो चुका है। उसे यह पता होना आवश्यक था कि उसे प्रकाशन पूरा होने के बाद भी उसके लिए काम होना था। अन्ततः उसने पतमुस से छोड़े जाना था, जिससे वह अपना कार्य फिर आरम्भ कर सके।[11]

यूहन्ना को दिए गए इस निर्देश का कारण जो भी रहा हो'' उसके लिए आगे पड़ा काम वैकल्पिक नहीं होना था। आयत 11 में ''होगी'' *dei* का अनुवाद है, जो ''नैतिक आवश्यकता'' का संकेत देता है। उसे ''फिर से लोगों और जातियों और भाषाओं और राजाओं के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करनी'' *थी*। इस प्रेरित को यह नहीं बताया गया था कि उसकी सेवकाई से उसे प्रसन्नता मिलेगी या ''अच्छा लगेगा,'' परन्तु उसके लिए इसे करना *आवश्यक* था। यूहन्ना जैसे लोगों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हर कीमत पर वचन का प्रचार करने को तैयार रहते हैं!

आयत 11 वाली आज्ञा यूहन्ना के लिए थी, परन्तु इसे हर मसीही पर लागू किया जा सकता है। प्रभु ने हम में से हर किसी पर वचन को सब लोगों तक पहुंचाने की नैतिक ज़िम्मेदारी डाली है (मत्ती 28:19; मरकुस 16:15; लूका 24:47)। अध्याय 10 हम सबको वचन के लिए धन्यवाद देने को, वचन को ग्रहण करने और फिर उस वचन को दूसरों के साथ बांटने की चुनौती देता है।

किसी ने कहा है कि मनुष्य के जीवन में दो दिन बड़े महत्वपूर्ण होते हैं, पहला उसके जन्म का दिन और दूसरा वह दिन जब उसे पता चलता है कि वह पैदा *क्यों* हुआ था।[12]

बाइबल सिखाती है कि हमारा मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है (मत्ती 5:16; 1 कुरिन्थियों 6:20; 1 पतरस 2:12; 4:16) और उसे करने का एक महत्वूपर्ण ढंग उसका वचन दूसरों को बताना है।

सारांश

अगले अध्याय का मुख्य संदेश वचन का प्रचार करने की चुनौती होगा। उस चुनौती को पाने से पहले, उस वचन की हर बात हमारे लिए मानना आवश्यक है। हमने वचन को ग्रहण करने के लिए कितना समय दिया है कि हम दूसरों को भी बता सकें? अध्याय 10 यह बताता है कि यदि कलीसिया को कठिन समयों में स्थिर रहना है तो मसीही लोगों के लिए इस पुस्तक के निकट रहना आवश्यक है![13]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

''कड़वी मिठास,'' ''परमेश्वर के दूत होने का आनन्द और दुख,'' और ''कभी न खत्म होने वाला काम, इस पाठ के लिए सम्भावित शीर्षक हो सकते हैं ।''

टिप्पणियां

[1]स्पष्टतया इस दर्शन में यूहन्ना ''स्वर्ग में'' के बजाय अब ''पृथ्वी पर'' था (4:1)। दर्शन में यूहन्ना शारीरिक रूप से कहीं-कहीं गए बिना दोनों जगह हो सकता था। [2]जॉन बार्टलैट, *बार्टलैट' स फैमिलियर कोटेशंस* सामा. संस्क. जस्टिन कैप्लन (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एण्ड कं., 1992), 160 में दोहराया गया फ्रांसिस बेकन, *ऑफ स्टडीज़*। बेकन (1561-1626) एक अंग्रेज निबन्ध लेखक, वकील, राजनेता और दार्शनिक था। हम उसके वक्तव्य में जोड़ सकते हैं, ''और कुछ से ऐसे बचना चाहिए जैसे ज़हर से।'' [3]यहेजकेल 2:8 से 3:14 पढ़ें और इन पदों की तुलना प्रकाशितवाक्य 10 से करें। [4]रैवलेशन: *होली लिविंग इन ऐन अनहोली वर्ल्ड: रैवलेशन,* द फ्रांसिस एसबरी प्रैस कमैंट्री, सामा.संस्क., एम. राबर्ट मुल्होलैंड, जूनि. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एस्बरी प्रैस, 1990), 201. [5]अमेरिका में हम आज भी ऐसी अभिव्यक्ति का इस्तेमाल करते हैं: हम बुरी खबर को ''निगलने के लिए कड़वी गोली'' कहते हैं। [6]एच. एल. एलिसन, *1 पीटर-रैवलेशन,* स्क्रिप्चर यूनियन बाइबल स्टडी बुक्स सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 63. [7]वचन में है ''और उन्होंने मुझसे कहा।'' हमें यह पक्का पता नहीं है कि ''उन्होंने'' किसे कहा गया था, हो सकता है स्वर्गदूतों के साथ आवाज़ों को या हो सकता है परमेश्वर या मेमने को। यूनानी विद्वान कहते हैं कि इस वाक्यांश का अर्थ इतना ही हो सकता है कि ''मुझसे कहा गया।'' [8]यूनानी उपसर्ग के अनुवाद ''पर'' का अर्थ बहुत चर्चा का विषय है। मूल शब्द *epi* है, जिसका अर्थ ''ऊपर'' है। कुछ लोग यह जोर देते हैं कि शब्द का अनुवाद ''पहले'' (देखें KJV) होना चाहिए, परन्तु इस उपसर्ग के बाद अनुवादित शब्द से संकेत मिलता है कि इसका अर्थ ''पर, विषय में, सम्बन्ध में'' होना चाहिए। NKJV में ''about'' है। [9]जैसा कि पाठ में पहले ध्यान दिया गया था, यह सूची प्रकाशितवाक्य में कहीं और ''सभी जगहों के सब लोगों'' के लिए है (देखें 7:9; 11:9; 17:15)। यहां एक महत्वपूर्ण अन्तर दिखाई देता है: ''गोत्रों'' के बजाय ''राजा'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है। यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पिछले भाग में राजाओं के हवाले के कारण हो सकता है (देखें अध्याय 17)। [10]कइयों का विचार है कि ये शब्द जितने

यूहन्ना के लिए थे उतने ही यूहन्ना के पाठकों के लिए भी थे ताकि उन्हें आश्वस्त किया जा सके कि इस प्रेरित को प्रकाशितवाक्य लिखने का काम परमेश्वर की ओर से दिया गया था।

[11]पतमुस ये छूटने के बाद यूहन्ना द्वारा किए गए काम के सम्बन्ध में कई अनुमान लगाए गए हैं। कइयों का मानना है कि उसने इफिससु में जवान प्रचारकों के लिए एक पाठशाला खोली थी। कइयों का मानना है कि वह भ्रमण करता था। एक मज़बूत (बाइबल से बाहर की) परम्परा है कि उसके अन्तिम वर्ष इफिसुस में बीते, परन्तु उसके द्वारा किए काम के बारे में हम केवल इतना ही अनुमान लगा सकते हैं। [12]जिम मैक्गुइगन *द बुक ऑफ़ रैवलेशन , लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ अध्याय 34* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 106.[13]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो लोगों को सुसमाचार की आज्ञा मानने के लिए कहने का अच्छा ढंग यह बताना है कि सुसमाचार को ग्रहण करने में ''मीठा'' और इसका इनकार करने में ''कड़वा'' क्या है। मरकुस 16:15, 16 केवल उद्धार ही की बात नहीं करता, बल्कि दण्ड की बात भी करता है। रोमियों 6:23 परमेश्वर के दान की बात करता है परन्तु इसमें पाप की मज़दूरी की भी बात है। लोगों को प्रभु की आज्ञा मानकर ''मीठा बढ़ाने और कड़वा कम करने'' को प्रोत्साहित करें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. अध्याय 10 की पहली सात आयतों की समीक्षा करें।
2. किस अर्थ में हम किसी पुस्तक को ''खा'' सकते हैं? परमेश्वर के वचन को ''खाने'' के लिए क्या करना पड़ता है?
3. परमेश्वर का संदेश ''मीठा'' कैसे है? यह ''कड़वा'' कैसे है?
4. क्या हमें ''मीठा'' के साथ-साथ ''कड़वा'' लेना आवश्यक है?
5. पुस्तक खा लेने के बाद यूहन्ना को क्या करने के लिए कहा गया था? क्या हमें ऐसी ही आज्ञा मिली है?

पुस्तक खाते हुए यूहन्ना (10:10क)